ठुमक

¤ÉSSÉÉ EòÒ EòSÉÒ, ¤ÉSSÉÉ EòÒ Eò±É¨É

एकलव्य का प्रकाशन

बच्चों की कूची, बच्चों की कलम

अ. सुमित्रा देवी, सातवीं

एकलव्य का प्रकाशन

टेमरु

Temru

बच्चों की कूची, बच्चों की कलम

पुस्तकालय एवं गतिविधि कार्यक्रम, एकलव्य द्वारा संकलित

अप्रैल 2012 / 3000 प्रतियाँ
कागजः 80 gsm मेपलिथो व 210 gsm पेपर बोर्ड (कवर)
पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित

ISBN: 978-93-81300-42-8
मूल्यः ₹ 35.00

सम्पर्कः **एकलव्य**
ई-10, शंकर नगर बी.डी.ए. कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल 462 016 (मध्य प्रदेश)
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रकः भण्डारी ऑफसेट प्रिंटर्स, ई-3/12, अरेरा कॉलोनी, भोपाल 462 016 (मध्य प्रदेश)

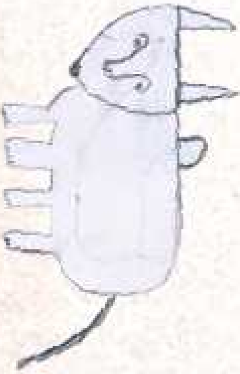

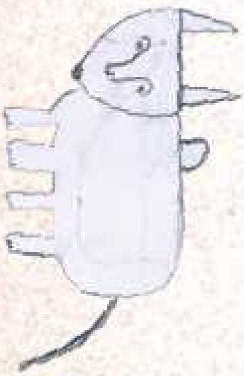

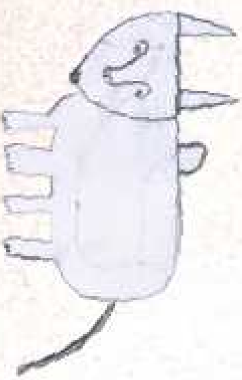

योगेश दनोरे, छठवीं, देशावाड़ी, ज़िला बैतूल, मध्य प्रदेश

बरसात के दिन	5
जब बीमार होते हैं।	5
मैं कल खेत पर...	7
कन्ट्रोल की दुकान	7
भोजन बनाने में	9
वह लड़की...	9
नमस्ते...	10
घटना घटी	11
हमारे खेत में...	11
कुत्ता और पिन्टू	12
नाना और रानी	13
यह मेरे घर का चित्र...	15
तुम्पा ओर गोरेया	15
सइकील की कहानी	16
मैं रास्ते से...	17
हमारे खेत पर...	18
मेरे गाँव के पास...	18
आज की बात	20
क्या आप समझते है...	21
हमारे यहाँ...	22
यह हमारा स्कूल...	22
झँमकुड़ी	23
एक चिड़ियाँ थी...	24
यह एक घर है...	26
हमारे गाँव में एक शेर...	26
मै गर्मी की छूट्टी मे...	28
रमकुड़ी	29
इस संकलन के बारे में	31

पूजा परमार, आठवीं, मानकुंड, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

बरसात के दिन

इन दिनों हमें बहुत मजा आता है। हरी-भरी हरियाली हमें बहुत अच्छी लगती है। कई प्रकार की चिड़िया आती है और चहचहाती है। नीम की पत्तियाँ हरी हो जाती है और पेड़ पर निंबोनियाँ आ जाती है। बरसात के दिन बगीचे में फूल बहुत अच्छे लगते हैं। हमें मिट्‌टी की खुश्बु बहुत अच्छी लगती है। बरसात के दिनों में रिम-झिम पानी गिरता है और इंद्रधनुष भी दिखाई देता है। हमारे घर पर गार भी गिरती है।

पूजा विश्वकर्मा, आठवीं,
मानकुंड, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

जब बीमार होते हैं।

बीमार होने पर हमारा सिर दर्द करता है। पैर और कमर भी दर्द करते हैं। हमें दवाईयाँ लेनी पड़ती है। भोजन करने की भी इच्छा नहीं होती है। हमारा मुँह कड़वा हो जाता है और ठंड भी बहुत लगती है। अधिक बीमार होने पर अधिक बाटल भी लगाई जाती है। बीमार होने पर बिस्तर से उठने की इच्छा नहीं होती है। हमें नींद ही नींद आती है। बीमार व्यक्ति को फल-फ्रुट व भोजन खाना चाहिये।

प्रियंका विश्वकर्मा, आठवीं, मानकुंड, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

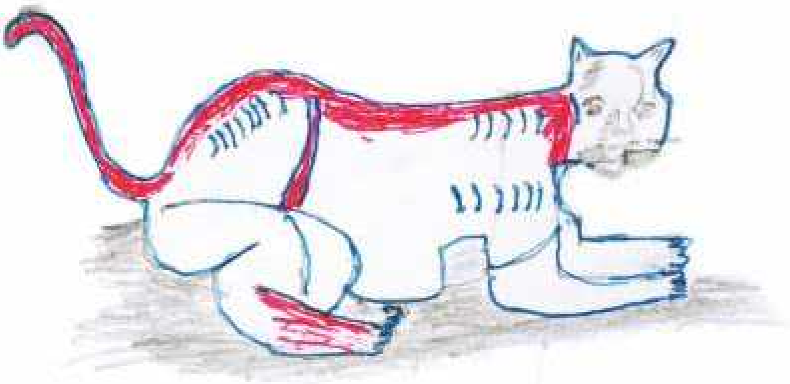

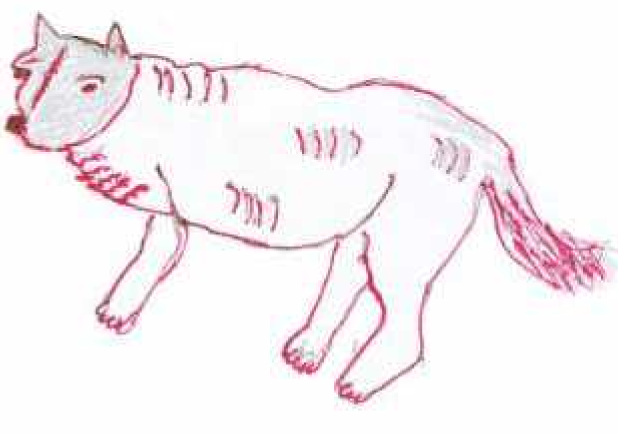

संदिप धुर्वे, आठवीं, बरेठा, ज़िला बैतूल, मध्य प्रदेश

मैं कल खेत पर जा रहा था। तभी मैंने जंगली बिल्ली को देखा। वह मुझे देखकर डरकर भागी। और खेत में डर के भागते ही जा रही थी।

कमलेश, छठवीं, महुखेड़ा, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

कन्ट्रोल की दुकान

जब हम कन्ट्रोल की दुकान पर जाते हैं तो हम कुछ न कुछ सामान खरीदते है। कभी-कभी तो हमें कन्ट्रोल की दुकान पर सामान नहीं मिल पाता है। एक बार मैं सोयाबीन का तेल लेने गया था तो वह मुझे नहीं मिला। फिर मैं घर वापस आ गया। मेरे मम्मी-पापा ने मुझे वापस भेजा और कहा यदि सोयाबीन का तेल नहीं है तो हल्दी, शंक्कर, मिर्च, मसाले, चाय-पत्ती लाने को कहा। तो मैं सोयाबीन का तेल नहीं लाया और दूसरे सामान लेकर आ गया।

अशोक, आठवीं, महुखेड़ा, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

सोनम, आठवीं, देशावाड़ी, ज़िला बैतूल, मध्य प्रदेश

भोजन बनाने में

भोजन बनाते समय कई प्रकार की चीजें बनाने को मिलती है जैसेः- रोटी, सब्जी व पराठे आदि। किचन में जाकर बाहर आने का मन ही नहीं करता है क्योंकि पकवान की खुश्बु ही इतनी अच्छी आती है। सब्जियों में तो कई प्रकार के सामान डालते हैं। भोजन के बिना तो हम रह नहीं सकते हैं। गरमा-गरम भोजन खाने में बड़ा मजा आता है। भोजन की खुश्बु लेते ही जोर से भूख लगना शुरू हो जाती है। भोजन बनाने में बड़ा मजा आता है। एक बार भोजन बनाकर देखना कितना मजा आता है।

सोनू, छठवीं, धानीघाटी, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

वह लड़की बहुत सुंदर है। वह मनासा आती है। वह बोलने में बहुत अच्छी है। वह कभी झूठ नहीं बोलती। किसी से झगड़ा नहीं करती है। किसी का बुरा नहीं चाहती। वह लड़की दयालु है। उसका नाम अंजली है। मुझे उस लड़की पर गर्व है।

निलेश सांवलिया, छठवीं, मनासा, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

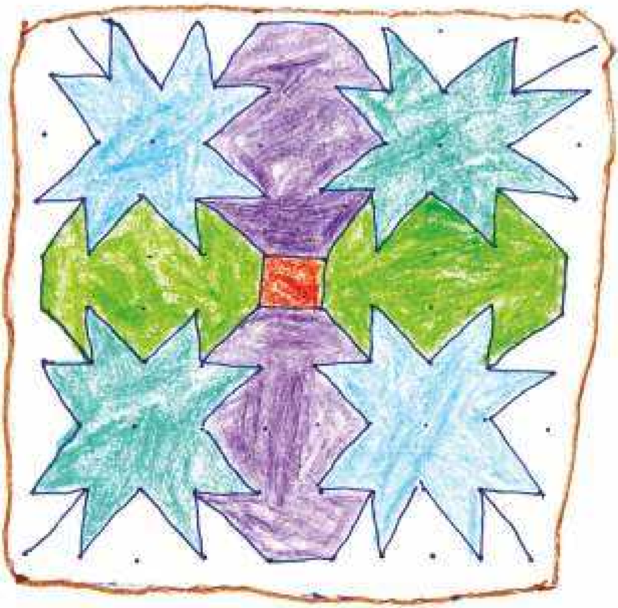

नमस्ते, मेरा नाम संगीता है। मुझे रांगोली बहुत पसंद है। मुझे रांगोली के सिवा कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। और लगता भी है तो बस पढ़ाई। वैसे आप लोग को मेरी रांगोली अच्छी लगती हो तो भी शुक्रिया और नहीं भी लगती हो तो भी शुक्रिया।

संगीता चौहान, आठवीं, मानकुण्ड, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

घटना घटी

सन् 2 क मे जब हम सातवी कक्षा मे पढते थे। जब हम एक दिन डेम तालाब मे मिट्टी लेने जा रहे थे। तो धनतेरस का दिन था। हम चल दिए। रास्ते मे जब हम जा रहे थे तो एक मोटर साइकिल आ रही थी। मोड़ था हम जा रहे थे। तो मोटर साइकिल वाले ने हमारी साइकिल से टक्कर कर दिया। मोटर साइकिल वाला गलत लाइन पर चल रहा था तो अभिषेक के पेट पर चोट आई और मोटर साइकिल वाले के इंटिकेटर टूट गया और टाँग छुल गई। और हमारे घरवालो को पता चला तो उन्होने उसके हल्दी लगाई और कहा के कैसे टक्कर हुआ तो उसने कहा कि ये गलत राह पर चल रहे थे। जबकि वह ही गलत राह पर चल रहा था। अगर हम वहाँ न होते तो वो बागुड़ से टकराता। हम सही राह पर चल रहे थे।

विमलेश सिमारा, आठवीं, समनापुर, ज़िला होशंगाबाद, मध्य प्रदेश

हमारे खेत में आलू बोए थे। दूसरे दिन ही बन्दर आकर खा गये। तो हमारे पिताजी रोज बन्दर देखने जाया करते। एक दीन मेरे पिताजी बाँस लेकर दौड़े तो बन्दर भाग गये। बाद मे मेरे पिताजी खेत में बैटे थे। वह एक बन्दर आया और उनके ऊपर दौड़ा तो वो घबरा कर भागे। बन्दर ने मे पिताजी को एक तमाचा मारा तो वो और जोर से भागने लगे फिर एक जगह गढ़ड़ा आया उस गढ़ड़े मे मेरे पिताजी का पैर फँस और निकला निकालने की बहुत कोशिश की जब भी नहीं निकला। फिर एक आदमी आया तो उसने पुछा क्या हुआ। मेरे पिताजी बोले मेरे पिछे बन्दर लगे है और मेरा पैर इस गड्ड़े में फँस गया है। तो उसने जौर लगाकर खिंचा तो निकल गया फिर उनको शान्ति मिली। उस व्यक्ति को मेरे पिताजी धन्यवाद दिया।

सतीश चौहान, सातवीं, घटिया गयासुर, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

देवेन्द्र, सातवीं, बरेठा, ज़िला बैतूल, मध्य प्रदेश

कुत्ता और पिन्टू

एक कुत्ता था और उसका दोस्त पिन्टू था। वह दोनों दिन भर खेलते रहते है। पिन्टू अपने दोस्त के साथ बहुत खुश था। अपने मम्मी-पापा की भी नही सुनता। उसके दिमाग में उसके दोस्त के अलावा कुछ भी नही था। वह अपने दोस्त से इतना प्यार करता था की शायद उसका दोस्त भी उसे न भुल पाए। एक दिन वे दोनो सड़क पार कर रहे थे की अचानक एक ट्रक आया और उसका दोस्त कुत्ता मर गया। पिन्टू इस सतमें को सह नही पाया और उसे इतनी तेज बुखार रहती थी। वह दिन भर कुत्ते काहि नाम जपता रहता था।

निशा सेंधव, आठवीं, पोनासा, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

नाना और रानी

एक दीन नाना ने सोचा कि रानी को बहूत डाराहू तो बीटू रानी डर के मेरी गोदी पर आ जाए। लेकिन रानी ने देख ली और नाना जी किपास पहुच गई और नानाजी को डराया और नानाजी डर जए। रात होते समय नाना जी ने सफेद रंग का कपड़ा पेहन कर बीटू रानी के कमरा पर घस पड़ ओ देखा की रानी तो कमरा पर नहीं है लेकिन कहा गयी होगी। छुपकर रानी ने नानाजी को डाराया ओ डर के मारे नानाजी थर-थर कापने लगे।

सोहनलाल बारस्कर, सातवीं, कोटमी, ज़िला बैतूल, मध्य प्रदेश

राधा नारले, छठवीं, मानकुंड, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

खुशबु, छठवीं, नेवरी,
ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

पूजा लोधी, छठवीं, नेवरी, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

जोगेन्द्र व पवित्रा मालवीय, सातवीं, पोनासा, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

यह मेरे घर का चित्र है। मेरे घर पर मेरी बहन रहती है। मेरा एक भाई व तीन बहन है। मेरे माँ, पिताजी और दादी किसान का काम करते हैं। मेरा भाई इंदौर में काम करता है। और मैं स्कूल में पढ़ने आती हूँ। अब मुझे और नहीं आता है।

सोनू अटारिया, छठवीं, मनासा, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

तुम्पा ओर गोरेया

तुम्पा के पिता रेल्वे मे काम करते थे। उसका परिवार रेल्वे क्वार्टर मे रहते है। ओर आजकल वे लोग पटना है। तुम्पा के पिता कोलकाता मे अपना तबादला करने की कोशिश मे है। काफी कोशिश के बाद अंत तबादला हो गया। तुम्पा बहुत खुश क्योकि उसके दादा-दादी ओर चाचा-चाची ओर भाई-भहन कोलकाता मे रहते है।

पवित्रा मालवीय, सातवीं, पोनासा, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

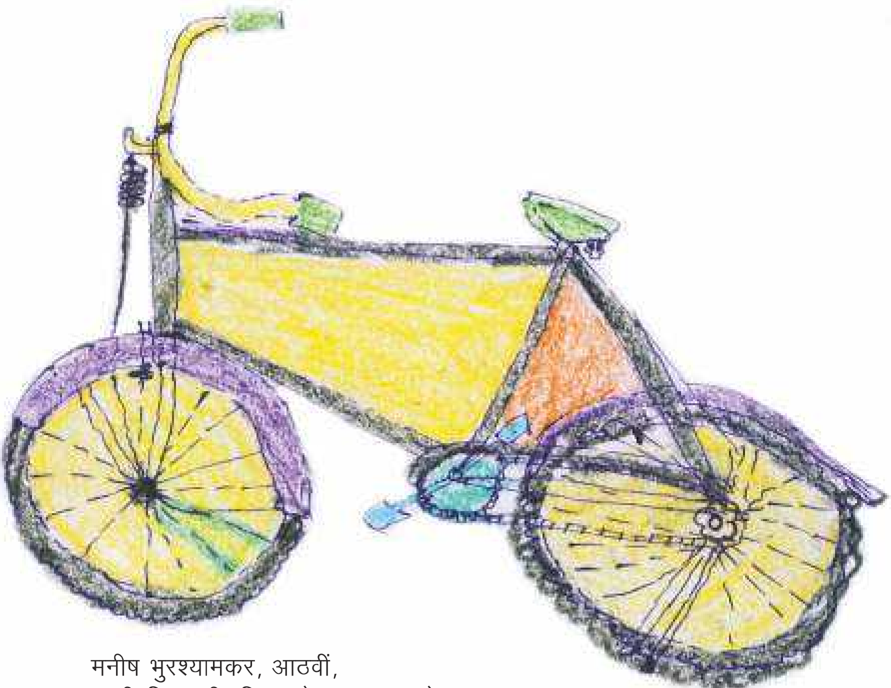

मनीष भुरश्यामकर, आठवीं,
माली सिलपटी, ज़िला बैतूल, मध्य प्रदेश

सइकील की कहानी

मे एक दिन बाजार गया था। मेरे साथ माताजी भी गई थी। मे साथ सइकील भी ले गया था। अचानक मेरी सइकील का टायर फटने के कारण बाजार वाले व्यकी चोक गए। जसके कारण भोत सारी चीज बिखर गई। किसी का आलू लुड़का तो किसी का बेंगन बिखरी। एक लोग की तो बकरी कार पर जा बैठी। मे मोटर सइकील बाल बाल बच गया। अगर मोटर ड्रावर ने बीरीक ना लागाय होता तो बड़ी घटना हो जाती। एक अदमी के पेर आलू पर पड़े और ऊ फिसल गया। मेने विद्यालय जाकर इस घटना का शिक्षक को बताया तो बच्चे हँसने लगे। तो शिक्षक ने कहा तो लोग को मे कल बताऊँगा।

विजय चौहान, सातवीं, धानीघाटी, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

मैं रास्ते से गुजर रहा था। मुझे एक पुतला दिखाई दिया। मैं बहुत डर गया। वह पेड़ पर लटका हुआ था। उसके गले में एक रस्सी भी थी। उसके कारण मुझे बहुत मार भी खानी पड़ी थी।

रचना व चित्रः इकबाल, छठवीं, महुखेड़ा,
ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

बुलबुल सेंधव, छठवीं, महुखेड़ा, ज़िला देवास

हमारे खेत पर एक पेड़ था। वहां पर मैं झूले में झूल रहा था। एक दिन मैं पेड़ के ऊपर चढ़ा तो मैंने सांप देखा। मैं वहाँ से भागा। फिर कभी नहीं गया।

राहुल अटाड़िया, सातवीं, लिम्बोदा, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

मेरे गाँव के पास एक गाँव है। वहाँ पर मेला लगता है। एक दिन मैं मेला देखने गया। मैंने मेले में तरह-तरह की मिठाइयां देखी। अनेक खिलौने, झूले, पान की दुकान आदि सामान देखा। मेले में झूले बहुत तेज घूमते हैं। मेले में बहुत सारे मनुष्य आते हैं। मेले में टाकीज भी लगता है।

बालकृष्ण, छठवीं, धानीघाटी, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

राहुल अंगोरिया, छठवीं, शिवपुर मुण्डला, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

बादल, छठवीं, धानीघाटी,
ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

आज की बात

आज मेने सुबह उठ कर टहलने गया तो मेने देखा की मेरे मोहल्ले के लड़के दोड़ रहे थे। मेने उनसे पूछा तो उनने बोला की अरुण आजाओ हमारे साथ दोड़ो। मेने बोला की नही में नही दोड़ सकता क्योंकि मेरी सरीर पूरे जकड़ गए है तो उनोने बोला की हमारे सरीर में भी पुरी तरीखा से जकड़ गए थे तो हमने सोचा की चलो हम दोड़ लगाकर देखे तो क्या फयदा होता है।

अरुण, सातवीं, कोटमी, ज़िला बैतूल, मध्य प्रदेश

विजेन्द्र सिंग व अजय रेकवाल, छठवीं, मानकुंड, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

ममलेश, छठवीं, महुखेड़ा, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

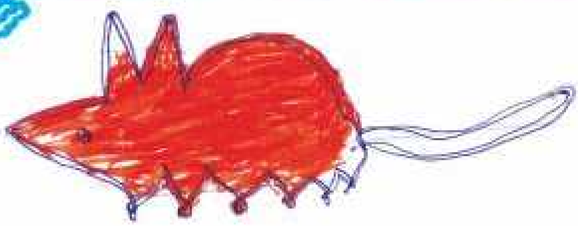

क्या आप समझते है ये बिल्ली मोसी क्या खाती है।
ये बिल्ली मोसी उदरा को खा जाती है और दूध पि
जाती है और कुत्ते बिल्ली के पुछे भागते है।

रोहित वर्मा व लखन पिपलोदिया, आठवीं,
शिवपुर मुण्डला, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

हमारे यहाँ एक हाट लगता है। हम उस हाट में जाते हैं। हमें अच्छी-अच्छी चीज़ें मिलती हैं। उसमें से अच्छी-अच्छी चीज़ें लाते हैं। हमें इस हाट में जाना अच्छा लगता है। हमें स्कूल अच्छी लगती है। हमारे यहाँ कुल सदस्य पाँच हैं। मुझे मेरी सहेलियाँ बहुत अच्छी लगती हैं। हमें सामान नेवरी लेने जाना पड़ता है। हमें खोआ अच्छा लगता है। हमें पढ़ना भी अच्छा लगता है।

पूजा, सातवीं, धानीघाटी, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

यह हमारा स्कूल है। इसमें हम पढ़ने आते है। कल हम क्रिकेट खेले दो टीमे थी। पहली टीम खेलने आई है, हमारी टीम का कप्तान था। पहली टीम मे मनीष व चन्द्रपाल खेलने आए उन्होने 50 रन बनाये और आउट हो गए। 150 रन पर उनकी टीम अलाउट हो गई। अब हमारी टीम खेलने आई और पहले दो लड़के खेले। 20 रन पर सतीश आउट हो गया, अब मे खेलने गया, 100 रन पर आउट हो गया और दूसरा लड़का खेलने आया और 20 आवर में हमने 140 रन बना लिए। उसके बाद हमारी टीम जीतने में 10 रन की जरूरत थी, और तब अंकित ने एक छक्का लगा दिया और हमारे रन 146 हो गए। तभी अंकित ने एक छक्का लगाया और हमारी जीत हो गई।

सतीश व चन्द्रपाल, सातवीं, बोरखेड़ा पूरबिया, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

झँमकुड़ी

झँमकुड़ी गाँव में रहती है। झँमकुड़ी नाचती है। झँमकुड़ी बहुत अमीर है। उसके पास एरोप्लेन है। झँमकुड़ी स्कुल जाती है। झँमकुड़ी 9 वी कीलास में पड़ती है।

अर्जुन पारग्या, सातवीं, बोरखेड़ा पूरबिया,
ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

एक चिड़ियाँ थी। वो एक दिन घूमने गई उसने एक जंगल देखा। जंगल में कुछ नही उगा था। वह सोचने लगी कि जंगल में कुछ नही है मैं अब क्या खाऊँगी। वो आगे गई तो गुलाब का एक फूल दिखा वह उस पर बैठ गई और सोचने लगी कितना सुन्दर फूल है लेकिन मैं इसे खा नहीं पाऊँगी। मेरी भूख का क्या होगा? फिर उसे एक झोपड़ी दिखी झोपड़ी के आस-पास दाने गिरे थे तो फिर उसको दाने दिखाई दिए। दाने बहुत सारे थे लेकिन उसने सोचा इतने सारे दाने में कैसे ले जा पाऊँगी? फिर दिमाग में आया तो एक बीज उठाकर जंगल में ले गई फिर एक गढ्ढा दिखा तो वहाँ उसने दाना डालकर मूँद दिया। एक हफ्ते बाद वहाँ जाकर देखा तो पेड़ उग गया, फिर वही उसने घर बना लिया। वो सोचने लगी घर तो बना लिया पर भूख का क्या करूँ? उसने दो चार दिन पानी पीकर गुज़ारा किया। वह सोचने लगी जंगल में कोई भी पशु-पक्षी आयेगे तो भूखा नहीं रहेगा। फिर रहते ही रहते बहुत दिन हो गए चिड़िया के बहुत सारे दोस्त बन गए। उसके दोस्तों ने कहा आप इतने दुबले क्यों हो? उसने कहा बहुत दिन हुए मुझे खाना नहीं मिला। उन्होंने कहा आप हमारे घर चलो हम आपको खाना खिलाएँगे आपकी भूख मिट जाएगी।

कक्षा सातवीं, कोटमी, ज़िला बैतूल, मध्य प्रदेश
के बच्चों द्वारा बनाई गई सामूहिक कहानी।

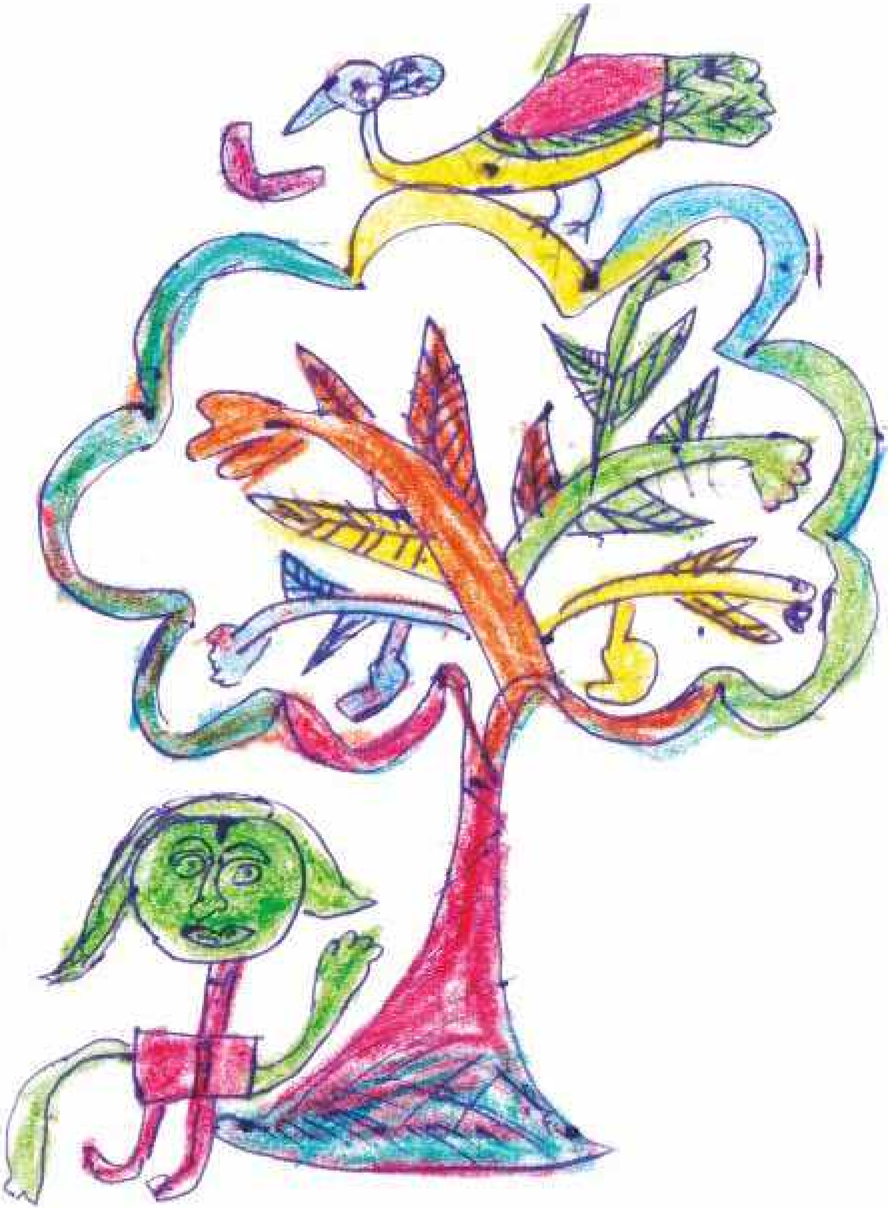

सोनी लोधी, छठवीं, नेवरी, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

यह एक घर है। घर बहुत सुन्दर है। उसमें एक लड़की खड़ी है। वह एक नारियल का पेड़ है। घर के पास एक जाली है। उसमें एक पेड़ लगा है। घर के पास एक दुकान है। दुकान में तरह-तरह की चीजें हैं। वह दुकानदार बहुत खड़ुस है।

रचना व चित्रः राखी, सातवीं, मुँजाखेड़ी, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

हमारे गाँव में एक शेर आया था। वह एक बकरी को खा गया था। गाँव वालों ने बहुत कोशिश की पर शेर नहीं भागा। दूसरे दिन एक गाय को खा गया था।

पूजा कुमारी, छठवीं, घटिया गयासुर, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

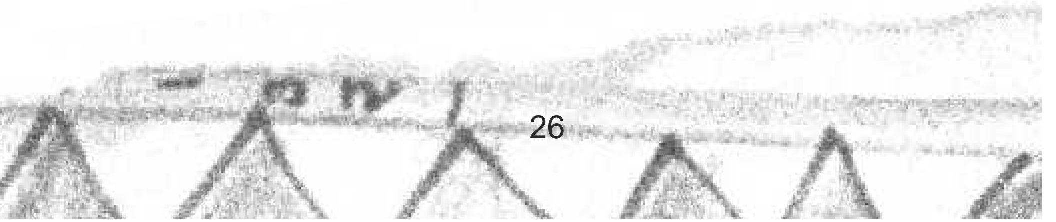

सुरेन्द्र बारस्कर, छठवीं, काँटावाड़ी,
ज़िला बैतूल, मध्य प्रदेश

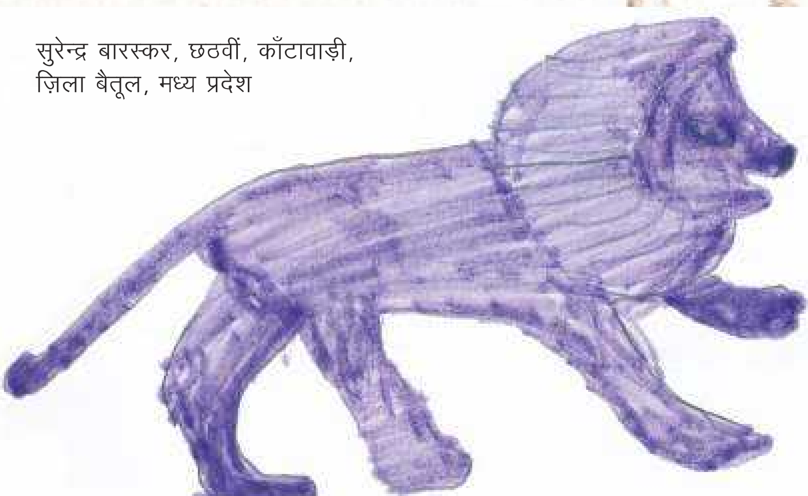

मै गर्मी की छूट्टी मे काम करने गया। मै बस मे था बस मे बहूत भीड़ थी। मुझे चक्कर और उलटी आने लगी। तभी मेरे साथ मेरे साथी थे। मुझे दरवाजे के पास जाने के लिए कहा। मे दिरे-दिरे दरवाजे के पास गया। मै दरवाजे के पास खड़ा रहा। तभी मोटर स्टेन आ गया। हमने वह पर नाश्ता किया और गाँव मे चले गए। गाँव मे जाते ही काम करने लग गए। एक दिन वह पर हमारा ठेकेदार आ गया। तभी उसने पूछा काम अच्छा चल रहा है। हमने कहा कि अच्छा चल रहा है।

बालकृष्ण, सातवीं, धानीघाटी, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

रमकुड़ी

रमकुड़ी बहुती गरीब है। उसके पास एक मटका है। ये पानी भरने जा रही है। ये गाँव गाँव जाती है और नाचती है रुपया कमाने के लिए। और इसमे बहुत दिमाग है। घर का पेट भरती है।

रचना व चित्रः महेन्द्र पिपलोदिया, आठवीं, शिवपुर मुण्डला, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

कयामत मंसूरी, सातवीं, मडुखेड़ा, ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

इस संकलन के बारे में...

एकलव्य के स्कूली व स्कूल के बाहर, समुदाय में संचालित शैक्षिक कार्यक्रमों में हमेशा से ही पुस्तकालय एक महत्वपूर्ण अंग रहा है। पुस्तकालय जहाँ बच्चे या बड़े किताबें व पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ें, चर्चाओं और कई अन्य रचनात्मक गतिविधियों में भाग लें। इसी क्रम में दो वर्ष पहले जब शासकीय माध्यमिक शालाओं में पुस्तकालय एवं गतिविधि कार्यक्रम शुरू किया गया तो उद्देश्य यह था कि पुस्तकालयों के ज़रिए बच्चों में न केवल पढ़ने की आदत को विकसित किया जाए बल्कि उन्हें देश-दुनिया के अच्छे साहित्य से परिचित करवाया जाए और उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति और भाषाई कौशल को प्रोत्साहित भी किया जाए।

पुस्तकालय एवं गतिविधि कार्यक्रम ने अनुभव लेखन और चित्रकला के द्वारा लेखन को सशक्त बनाने का प्रयास किया। प्रारम्भिक दौर में जब बच्चे पुस्तकालयों से जुड़े तो उनका लेखन काफी कमज़ोर था। इसलिए पढ़ी गई किताबों पर लिखित प्रतिक्रिया देना, आसपास के परिवेश से जुड़े अनुभवों को दीवार अखबार में दर्ज करना, अपने बनाए हुए चित्रों के बारे में लिखना जैसी कई गतिविधियों को जगह दी गई। जब भी बच्चे अपने बनाए हुए चित्र हमें दिखाते तो हम उन्हें कहते कि जिस सोच के साथ चित्र को बनाया है, उसी पर दो-चार लाइनें भी लिख दो तो बढ़िया हो जाए। बच्चे दो-चार लाइनें लिखने लगे। फिर ये लाइनें पैराग्राफ में बदलीं और फिर आधे-पूरे पन्नों में।

हमने बच्चों को रोज़मर्रा के जीवन के अनुभवों, जैसे खेती-किसानी की समस्याएँ, परिवार की समस्याएँ, शादी-ब्याह, गर्मी की छुट्टियाँ, घरेलू कामकाज, त्यौहार, घूमना-फिरना तथा लड़के-लड़कियों द्वारा किए जाने वाले कामों आदि के बारे में भी लिखने को कहा। इससे बच्चे केवल एक विषय में नहीं बँधे बल्कि हर विषय पर सोच-समझ सके और अपने परिवेश को, आसपास की घटनाओं को ज़्यादा गौर से देखने लगे। हमने शुरू से इस बात का खास खयाल रखा कि बच्चे ने चाहे जिस भी तरह से लिखा हो, उसमें गलतियाँ न निकालकर उसे प्रोत्साहित किया जाए। सकारात्मक सुझाव लगातार दिए जिससे लेखन में रोचकता और मज़ा बना रहे।

जब भी हम स्कूल में कदम रखते, बच्चे पहले से ही हमारी राह तकते मिलते। पहले से लिखी हुई अपनी ढेर सारी रचनाएँ और चित्र हमें लाकर देते। कुछ स्कूलों में बच्चे इस कदर उत्साहित थे कि उन्होंने लेखों और चित्रों को रखने के लिए बड़े खोकों को जुगाड़कर पेटियाँ बना ली थीं। दीवार अखबार में रचनाओं या चित्रों का आना बच्चों को बहुत जोश दिलाता, उन्हें लगता कि उनकी लेखनी या चित्र की अहमियत है और वे एक महत्वपूर्ण काम कर रहे हैं।

प्रत्येक बच्चा अपने आप में खास होता है और हर बच्चा दूसरे से अलग भी होता है। यहाँ तक कि उसकी अभिव्यक्ति का तरीका भी दूसरे से जुदा होता है। बच्चों में अपने आसपास की चीज़ों को गहराई से देखने की क्षमता होती है और वे शब्दों के माध्यम से उनका खूब बारीकी से दृश्य भी खींचते हैं। इस सहज बाल प्रवृत्ति को बढ़ावा तभी मिलता है जब उन्हें आज़ादी मिले अपने तरीके से सोचने, लिखने, चित्र बनाने की; रोकटोक या सही-गलत के दबाव के बिना अपनी कलम या कूची को चलाने की।

पुस्तकालय एवं गतिविधि कार्यक्रम में बच्चों को अपनी बात कहने का, भाषा को अपनी तरह से खुलकर प्रयोग करने का मौका मिला। इससे बच्चों की रचनाओं की संख्या लगातार बढ़ती रही, बढ़ती रही। दीवार अखबार में रचनाएँ और चित्र तो जगह पा ही रहे थे पर सामग्री के नन्हे पहाड़ों और बच्चों के बढ़ते उत्साह को देखते हुए हस्तलिखित पत्रिकाओं को निकालने का विचार जन्मा। और शुरुआत हुई *टेमरु* से। (टेमरु नाम बच्चों ने चुना था। टेमरु तेंदु (तेंदुपत्ता) के फल का नाम है।) फिर इस सिलसिले में *आवाज़, अजब गजब, बच्चों की दुनिया, दोस्ती, एक नजर, गुलदस्ता, नंदन, सब की शान*...नामक हस्तलिखित पत्रिकाएँ भी जुड़ गईं। इनमें प्रत्येक स्कूल के कई सारे बच्चों की रचनाओं को जगह मिली। *चकमक* में भी चुनिन्दा रचनाएँ प्रकाशित होती रहीं।

बच्चों की इन रचनाओं में साफगोई है और बिना लाग-लपेट के कहने का अन्दाज़ भी। जब इन सभी हस्तलिखित पत्रिकाओं को एक साथ देखा गया तो इनमें बच्चों के दृष्टिकोण से चित्रित ग्रामीण जीवन की एक गज़ब की झलक दिखाई पड़ी और इस तरह इस संकलन की भूमिका बनी। इसमें माध्यमिक कक्षाओं के उन बच्चों के चित्र और रचनाएँ शामिल हैं जो पुस्तकालय एवं गतिविधि कार्यक्रम से जुड़े हैं। रचनाओं के चयन में इस बात का ध्यान रखा गया है कि उनमें मौलिकता और विषय की विविधता हो। साथ ही कहानी कहने की शैली में भी अलग-अलग तरह के स्वाद का मज़ा आए। लीजिए, *टेमरु* आपके सामने है, किताब की शक्ल में...

पुस्तकालय एवं गतिविधि कार्यक्रम,

एकलव्य

बादल, छठवीं, धानीघाटी,
ज़िला देवास, मध्य प्रदेश

एकलव्य

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य की गतिविधियाँ स्कूल में व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में हैं।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य ऐसी शिक्षा का विकास करना है जो बच्चे से व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो; जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। अपने काम के दौरान हमने पाया है कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब बच्चों को स्कूली समय के बाद, स्कूल से बाहर और घर में भी, रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों। किताबें तथा पत्रिकाएँ इन साधनों का एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। बच्चों की पत्रिका *चकमक* के अलावा *स्रोत* (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स) तथा *शैक्षणिक संदर्भ* (शैक्षिक पत्रिका) हमारे नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान एवं बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ, सामग्री आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की हैं।

वर्तमान में एकलव्य मध्य प्रदेश में भोपाल, होशंगाबाद, पिपरिया, हरदा, देवास, इन्दौर, उज्जैन, शाहपुर (बैतूल) व परासिया (छिन्दवाड़ा) में स्थित कार्यालयों के माध्यम से कार्यरत है।

इस किताब की सामग्री एवं सज्जा पर आपके सुझावों का स्वागत है। इससे आगामी किताबों को अधिक आकर्षक, रुचिकर एवं उपयोगी बनाने में हमें मदद मिलेगी।

सम्पर्क: books@eklavya.in
ई-10, शंकर नगर बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर,
भोपाल - 462016

¤ÉSSÉ ¤ÉcÉ VÉºÉ xÉ½Ó ½ÉiÉ* ´É +{ÉxÉÒ iÉ®½ EÒ ±ÉÉMÉ ½ÉiÉ ½* ´É xÉ iÉÉ ¤ÉcÉ EÒÒ iÉ®½ ºÉÉSÉiÉ ½, xÉ ¤ÉcÉ EÒÒ iÉ®½ ¤ÉÉ±ÉiÉ ½, xÉ ¤ÉcÉ EÒÒ iÉ®½ Ê±ÉJÉiÉ ½, xÉ ¤ÉcÉ VÉºÉ ÊSÉjÉ ¤ÉxÉÉiÉ ½* ´É nÊxÉªÉÉ EÒ +{ÉxÉÒ ½Ò iÉ®½ ºÉ nJÉiÉ ½ +É® +{ÉxÉÒ ®SÉxÉÉ+É ¨É =ºÉ <ºÉ fMÉ ºÉ |ÉºiÉiÉ EÒ®iÉ ½ ÊEÒ ¤Éc =ºÉEÒÒ EÒ±{ÉxÉÉ ¦ÉÒ xÉ½Ó EÒ® ºÉEÒiÉ* =xÉ ®SÉxÉÉ+É EÉ {Ég-nJÉEÒ® ¤Éc ±ÉÉMÉ ÊºÉ¡Ò +SÉÎ¨¦ÉiÉ ½É ºÉEÒiÉ ½* ªÉÉ Ê¡Ò® +MÉ® ´É SÉÉ½ iÉÉ ´É ¦ÉÒ, ¤ÉSSÉÉ EÒÒ ½Ò iÉ®½, =x½ {ÉgxÉ-nJÉxÉ EÒÉ ¨ÉWÉÉ ±É] ºÉEÒiÉ ½*

<ºÉ ÊEÒiÉÉ¤É ¨É ¤ÉSSÉÉ EÒÒ BºÉÒ ½Ò ®SÉxÉÉB ½, +É® ´É ¤ÉSSÉÉ +É® ¤ÉcÉ, nxÉÉ EÒ Ê±ÉB ½*

एकलव्य

¨É±ªÉ: ` 35.00
A0195H
ISBN: 978-93-81300-42-8
9 789381 300428

SRTT के वित्तीय सहयोग से विकसित